घर से छुटकारा

अनुराधा गुप्ता

16-17 वर्ष की सुंदर, सुशील, डरी, सहमी लड़की ने हमें बताया कि उसके अपने परिवार के सदस्य (दादी, चाचा-चाची, पिता, बहन, नाना-नानी) उसके साथ बुरा सुलूक करते हैं। मारपीट, गाली गलौज, तानों की वजह से उसका अपने घर में रहना मुश्किल हो गया है। दादी के अपने चार बेटे थे। पहली पोती को उसने अपने पास रखा। लेकिन किशोरावस्था में प्रवेश करते ही दादी ने वापस मां-बाप के पास भेज दिया। मां-बाप भी उसे अपने पास नहीं रखना चाहते थे। थोड़ा पढ़े पिता बमुश्किल 6 जन का परिवार चलाते थे।

लड़की के काफी मिन्नत करने पर उसे घर में रख तो लिया गया पर महज़ एक नौकरानी की तरह। उससे छुटकारा पाने के लिए जल्दी ही एक अपाहिज (पोलियो से पीड़ित) धनी परिवार के लड़के से रिश्ता कर दिया। परंतु लड़की ने ब्याह से इंकार कर दिया। दूसरी बार एक बड़ी उम्र के व्यक्ति के साथ, जिसकी पहली पत्नी मर चुकी थी, रिश्ता तय किया। लड़की ने वहां भी शादी करने से इंकार कर दिया।

ताज्जुब की बात तो यह है कि इस पर उसके पिता ने कहा कि "तू घर से निकल जा। भले ही जी.बी. रोड जा, पेशा कर हमें कोई फर्क़ नहीं पड़ता है।" फिर भी वह सब परिणाम सोचकर घर ही में रहती रही। किंतु जब एक दिन उसकी छोटी बहन ने उस पर हाथ उठा दिया तो वह सह नहीं सकी और घर से निकल आई।

लड़की पढ़ी-लिखी, समझदार है। वह महिला संस्था के पास आई। लड़की नाबालिग है। हमें सोच समझकर कदम उठाना था। हम लोगों ने 8-10 दिन उसे अपने पास रखा। उसके घर फोन करके दादी व पिता को बुलाया। लड़की की दादी खुद ही मोहताज है। मां की एक साल पहले मृत्यु हो चुकी है। वे लोग उसे वापस ले जाने को तैयार थे। यह भी कहा कि उस पर अब कोई ज़ोर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। मगर लड़की ने वापस जाने से इंकार कर दिया।

अब वह और ज़्यादा पढ़-लिखकर कुछ बनकर दिखाने की कोशिश में है। एक दुखी व मजबूर महिला-संस्था के साथ रह रही है और नए सिरे से जीवन निर्माण कर रही है। ज़रा सोचें उसे किस कसूर की सज़ा दी जा रही है? □